

MBh. 3, 15280. सभाराः संधियन्तु 1, 2023. 8133. संभृतसंभार 5, 1161. तन्वं
तं भर्स्व *maché dir zurecht* AV. 18, 3, 9. 4, 52. संधियमाणाः (= पुण्यमाणाः
MAHIDH.) सोमः VS. 8, 57. Ait. Br. 1, 8. 18. 3, 33. 4, 1. आसन्दोम् 8, 12.
सोमम् ÇAT. Br. 1, 6, 4, 5. आप्यायनम् 11. यज्ञम् 7, 1, 4. 9, 2, 28. अयः 2, 1,
1, 3. fgg. 5, 2, 2, 1. 8, 4, 1, 17. KĀTJ. ÇR. 14, 5, 23. मरुवीरान् 26, 1, 1. 11.
KAUÇ. 33. 67. 139. ĀÇV. ÇR. 6, 6. Suçr. 1, 37, 17. संधियतामायुषो राड्या-
भिषेकः VIKR. 83, 17. यस्तु रसः संभृत घोषधीषु VS. 19, 33. 31, 17. ÇAT.
Br. 5, 4, 5, 1. Ait. Up. 4, 1. एभिरेव धैः सर्वैरभिषेचनसंभृतैः R. 2, 22, 27.
मधूनि मधुकारिभिः संभृतानि 56, 8. वसिष्ठसंभृतैः सलिलैः RAGH. 8, 3. सं-
भृतबल (Heer) RĀGA-TAR. 6, 125. 1, 2. त्यागाय संभृतार्थानाम् *zusammen-
gebracht, gesammelt* RAGH. 1, 7. Spr. 3604. संभृतापध (विद्य) 4137. स्नेहः
(Oel und Liebe) चिरसंभृतः VID. 302. MBh. 7, 3809. 5, 5775. RAGH. 5, 5.
Spr. 421. नभसि जलदलद्वीपं संभृताम् 1427. निदाघसंभृतजगत्संताप 794.
KĀURAP. 46. BHATT. 6, 80. ÇĀK. 69, 15, v. 1. VIKR. 38. सौकुमार्यगुणसंभृत-
कोर्ति KIR. 9, 49. सूरिभिः संभृतश्रुतैः RĀGA-TAR. 3, 132. वावो वीर्येण संभृ-
तमेन *zusammengedrängt* ÇĀK. ÇR. 10, 13, 12. कुरी *gedrungen, wohl-
genährt* RV. 6, 37, 3. 7, 73, 5. 8, 34, 12. शब्द so v. a. *laut* MBh. 7, 3911.
यन्मेषादिकालात्संभृतम् (वत्सरम्) *zusammengesetzt* MAITREY. 6, 4. प-
ञ्चभिः (v. 1. पञ्चधा) संभृतः कायः *aus fünf Elementen zusammengefügt* Spr.
1667. पासुं (वीरुत्सु) विद्य संभृतम् *Zusammensetzung, Zubereitung* AV.
8, 7, 18. रथ 10, 3, 20. गाथाः स्वयंसंभृताः *selbst verfertigt* ÇAT. Br. 13, 1,
2, 8. देश *zugeliefert, zubereitet* Suçr. 2, 46, 9. संभृतक्रतु RAGH. 11, 32.
यथावत्संभृतं सर्वं पुरुषैः सुसमाहितैः R. 1, 12, 34 (33 GORR.). ÇĀK. 132.
उपनीयतां मन्त्रेण संभृतः कुमारस्याभिषेकः VIKR. 87, 10. संभृते शिखिनि
RAGH. 19, 54. KUMĀRAS. 3, 17. PRAB. 78, 7. ज्ञातकर्मादिकाः क्रियाः RĀGA-
TAR. 1, 75. सरिडुत्तरपोषाय *vorbereitet* 4, 571. मधुसंभृतां कमलिनीम् *her-
vorgerufen, bewirkt* RAGH. 9, 30. सुवदनावदनासवसंभृतः — कुसुमोद्गमः 33.
सुरतश्चमसंभृता मुखे ध्रियते स्वेदलवोद्गमः 8, 50. असंभृतं माण्डनमङ्गयष्टेः
nicht gemacht so v. a. *natürlich* KUMĀRAS. 1, 31. ब्रह्मबलसंभृता *gewonnen,
erlangt* R. 1, 34, 16 (33, 16 GORR.). मत्तपोवीर्यसंभृत (पुत्र) MBh. 1, 677.
PAÑKAR. 4, 4, 12. सर्वैरङ्गैः संभृतः *mit allen Gliedern ausgerüstet* AV. 4,
14, 9. संभृत उच्चियाभिः *mit Leder bezogen* (Trommel) 5, 20, 1. 21, 3. यज्ञः
सर्वसंभारसंभृतः *ausgerüstet* R. 1, 60, 8. मरुसंभारसंभृत (ब्राह्मण) PAÑKAR.
1, 3, 3. MBh. 14, 687. fg. तेनासौ संभृता देवा वृषेण तु विभावसुः HARIV.
388. अनल्पतदीयधनसंभृत (यानपात्र) so v. a. *beladen* VID. 223. über-
zogen, bedeckt: भस्मवर्णप्रकाशेन तमसा संभृतं (संवृतं ed. Bomb.) नभः
MBh. 4, 1288. काशकुशचर्मवत्कलसंभृताङ्गाः (°संवृताङ्गाः ed. Bomb.) 12,
7002. अङ्गुलिसंभृताधराष्ठ ÇĀK. 73, v. 1. für °संवृताधराष्ठ. — 3) unter-
halten, ernähren: संव्रभृतात् NĀRADA in DĀJABH. 37. कञ्चित् संभृता भृत्याः
R. 1, 32, 8. — संभृत्य बल° HARIV. 2231 fehlerhaft für संभृत्यबल°, wie
die neuere Ausg. hat. Vgl. पुरुसंभृत, संभार, संभार्य. — caus. *zusammen-
bringen* —, *zurüsten lassen*: संभारयासु नृपते संभारान्यज्ञसाधकान् R.
1, 11, 3.

— अभिसम्. partic. °भृत *ausgerüstet, versehen mit*: गार्ग्यतेजो° MBh.
12, 12959. अभिसंवृत ed. Bomb.

— उपसम् *zusammenbringen, zurüsten*: उपसंभृतसंभार Suçr. 1, 33,
17. 56, 17.

2. भृ (भृ), भृणाति DĀTUP. 31, 21 (भर्त्सने. भरणो. भृजि. हृङ्ने).

V. Theil.

भृ (von 1. भृ) 1) adj. f. आ *tragend; bringend, verleihend; erhal-
tend*; selbständig nur in etymologischen Erklärungen: बिलं भर् भवति
बिभर्ते: *auferens* Nir. 2, 17. बलं भर् भवति बिभर्ते: *auferens oder ferens*
3, 9. Häufig am Ende eines comp.; vgl. अत्तरा°, स्त°°, कट°°, कुल°°. देह°°, पुष्टि°, वाज्ञ°, विद्य°, शके°, सत्य°, सद्बल°. — 2) m. parox. a)
das Nehmen, Tragen; das Davontragen, Gewinnen: अयो त्वा गोष्ठो
अध्यरुत्तद्वाय AV. 11, 1, 13. भ्राय सु भरत भागमुत्थियं प्र वायवे RV. 10,
100, 2. ऋभृराय सं शिशातु सातिम् 1, 111, 5. उत स्मै न वस्त्रमथि न तापमनु
क्रोशसि तितयो भर्षु rapina 4, 38, 5. Vgl. डुर्भर. — b) *Bürde, Last* (vgl.
भार) TRIK. 3, 3, 365. H. an. 2, 444. MED. r. 70 (lies भरो st. भारी).
Spr. 70. 303. 672. VĀSAVAD. 2, 4. BHĀG. P. 1, 3, 23. BHATT. 3, 51. 13, 25.
मानवौघ° HARIV. 4331. गर्भ° KATHĀS. 28, 1. °सह Spr. 419. विपुलश्रो-
णी° 633. स्तन° 918. 1530. 1632. 2101. 3080. ÇĀK. 9, 78. PAÑKAR. 3, 5.
23, 7, 31. 12, 4. DHĀRTAS. 88, 2. कुटुम्ब° ÇĀK. 95. Am Ende eines adj.
comp. f. आ BHĀG. P. 1, 17, 26. Nach COLEBR. und LOIS. zu AK. 2, 9, 87
auch ein best. Gewicht, = भार = 20 तुला. — c) *Masse, Menge. Ueber-
maass* AK. 1, 1, 4, 61. TRIK. H. 1306. H. an. MED. भरेण सर्वतो राज्ञां
शिरसि नतिमाययुः *in Menge* KATHĀS. 9, 18. कवरी° Gīt. 12, 26. सलि-
ल° MRĀK. 92, 7. वाष्प° Spr. 27. ÇĀK. 81, v. 1. कुसुम° BHĀMINIV. 1.
52. केसरभरैः ÇĀK. 9, 47. कारभरैर्लेभि गताः पार्थिवीः VER. in LĀ. (II) 20,
20. परिमल° Spr. 2130. अतिप्रणय° BHĀG. P. 5, 8, 10. अनुराग° 7,
11. कोप° Gīt. 3, 5. भक्तिभरेण नममूर्तिः PAÑKAR. 3, 9, 19. शौर्यविधम-
भर् बिधति (राज्ञिनि) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 304, ÇI.
12. सक्कारकुसुमकेसरनिकर° Spr. 3224. पीनपयोधरभार° Gīt. 1, 39.
PRAB. 40, 3. Am Ende eines adj. comp. f. आ: इष्येयोरुभारभर्या BHĀG.
P. 5, 3, 7. भर् कर् *sein Möglichstes thun* HIT. 47, 3. Vgl. निर्भर. —
d) (*das Anpacken*) Kampf, Streit NĀIGU. 2, 17. ययानांतो भर् भरे
वृत्रका प्रुमेो अस्ति RV. 1, 100, 2. भर् भरे पुरेयोधा भवतम् 7, 82, 9. इन्द्रं
मैदां गच्छतु ते भ्राय 9, 97, 6. भर्षु जिग्युषाम् 47, 5. इन्द्रं वृत्राय हत्तवे
पुरुहूतमुप बुवे। भर्षु वाज्ञसातये 3, 37, 5. 30, 22. 54, 8. 8, 13, 3. ता हि
मय्यं भ्राणामिन्द्रायो अथिहितः 40, 3. 6, 17, 8. 23, 9. 9, 100, 2. भर् कृतं
वि चिनुयाम 97, 58. भर् कृतुः 8, 16, 3. 1, 132. 1. 10, 102, 2. AV. 4, 29, 1.
Vgl. ῥάμν; भर् इति संप्रदानाम् भरतेर्वा हरतेर्वा Nir. 4, 24. — e) (*das
Erheben der Stimme*) Jubelruf, Loblied: स्वाशियं भरमा याहि सोमिनः
RV. 10, 44, 5. 4, 24, 7. (दधन्विरे) भ्रासः कार्णामिव 9, 10, 2. 16, 5. 8.
53, 1. 1, 112, 1. कारं न विद्ये अहस्त देवा भर्म्मिन्द्राय पद्विं जघान 5.
29, 8. शुनमन्धाय भर्म्मह्यत् 1, 117, 18. — Vgl. सह°, सु°.

भर्ग ein zur Erkl. von भर्ग gebildetes Wort, das in भ (= भासयती-
मान् लोकान्, र (= रञ्जयतीमानि भूतानि) und ग (= गच्छन्त्यस्मिन्नाग-
च्छन्त्यस्मादिमाः प्रजाः) zerlegt wird; davon nom. abstr. °व n. MAITREY. 6, 7.

भर्त UṆĀDIS. 4, 104. m. Töpfer UĒGVAL. Diener Schol. zu UṆ. 4, 107. —
भरटेन हरति = भरटिक gaṇa भस्त्रादि zu P. 4, 4, 16.

भरटक und भरडक m. Bez. einer Art von Bettelmönchen: °द्वात्रिंशिका
f. Titel einer aus 52 Erzählungen bestehenden Schrift Verz. d. Oxf.
H. No. 329.

भरटिक adj. (f. °कौ, = भरटेन हरति gaṇa भस्त्रादि zu P. 4, 4, 16.

भरडक s. भरटक.

भरण (von 1. भृ) 1) adj. *erhaltend, während* Nir. 9, 28. — 2) m. =